

ISSN : 2277-2359

निबंधमाला

(An International Refereed Research Journal, UGC-CARE Listed)

वर्ष 3, अंक 14

मार्च, 2021

संपादक

डॉ. मधुकेश्वर भट्ट

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान

56-57, जनकपुरी नई दिल्ली-110056

- प्रगतिशील कवियों में शोषित पक्षधरता 58-61
डॉ. टीकम चंद मीना
- प्रगतिशील समाज निर्माण में तेलुगु कविता का योगदान 62-67
डॉ. सत्य प्रकाश चतुर्वेदी
- सिर्फ व्याख्याकार नहीं है आलोचक 68-72
डॉ० वीना सुमन
- ✓ • समकालीन कविता में अशोक वाजपेयी की अभिव्यक्ति 73-80
डॉ. राजेन्द्र यादव
- 'मेरा परिवार' में वर्णित महादेवी का मानवेतर प्रेम 81-82
अनुराधा राय
- राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में बौद्ध संस्कृति 83-85
राहुल राज
- मन्नू भण्डारी की कहानियों में मनोवैज्ञानिक तत्व 86-92
सुनील कुमार यादव
- अरुणाचल प्रदेश की आपातानी जनजाति का लोक-जीवन 93-97
ओरोती ताबी
- झारखण्ड के सदान एवं उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : एक 98-105
अवलोकन
प्रिंस कुमार
डॉ० सीमा ममता मिंज
- अरुणाचल प्रदेश की आदी जनजाति का इतिहास और 106-114
सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना : एक परिचयात्मक अध्ययन
मुमने परमे



समकालीन कविता में अशोक वाजपेयी की अभिव्यक्ति

डॉ. राजेन्द्र यादव

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, मध्यप्रदेश - 470003

शोध सारांश :

समकालीन कविता में अशोक वाजपेयी का काव्य-संसार समकालीन जीवन में अलक्षित हो चुके जीवन और उसकी निजी स्मृतियों की दुनिया में वापसी का संसार है। यहाँ देवता हैं, पुरखे हैं, परिवार है, पड़ोस है और उनके नये अर्थ और स्मृतियों को खोलती भाषा है। बीसवीं सदी में अकेले हो गये एक संवेदनशील कवि की बैचेनी का युगबोध है। अपने समय का खामोश सामाजिक तनाव है, जो जीवन में अपने न होने को शब्दों में भरने का उपक्रम बन गया है। यहाँ कविता बीसवीं सदी में छूट रहे, टूट रहे रिश्तों के खालीपन में जीवन की जरूरी समीक्षा है। साहित्य में समकालीन जीवन के साथ समकालीन कलाओं का गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य से उसकी मनुष्यता छीन रही शक्तियों का साहित्य के साथ कलाएँ भी प्रतिरोध करती हैं, कलाओं का यही प्रतिरोध समकालीन कविता में यहाँ गहरी अर्थमयता के साथ दर्ज किया गया है। इसी अर्थ में अशोक वाजपेयी कविता का सृजन करते हैं।

शब्द कुंजी/कीवर्ड : समकालीन, कविता, अभिव्यक्ति, आधुनिकतावाद, साहित्य, समाज, मनुष्य

प्रस्तावना :

अशोक वाजपेयी की कविताएँ बीसवीं सदी के महान् सत्यों की चकाचौंध में मनुष्य को उसके समाज, परिवार, रिश्तों की छोटी-छोटी स्मृतियों को फिर से ताजा करती हैं। यही कविता का जनतंत्र है। जिसमें जीवन की सच्चाइयों को कविता फिर हमारे सामने प्रकट करती है। कविता का समाज कवि का कोई काल्पनिक समाज नहीं है, यहाँ कविता का समाज, शब्दों और भाषा के साथ वास्तविक समाज के रूप में दर्ज किया गया है। आधुनिक युग रचनाओं के संदर्भ में आलोचक रामस्वरूप चतुर्वेदी का मानना है कि, "आधुनिक भाव-बोध के समग्र साहित्य की एक प्रमुख विशेषता उसका स्वचेतन होना है। परिवर्तन और विकास के बीच प्रधान अंतर चेतनता का है। परिवर्तन सहज है, विकास प्रयत्न-साध्य है।"¹

समकालीन कविता में अशोक वाजपेयी का काव्य-संसार समकालीन जीवन में अलक्षित हो चुके जीवन और उसकी निजी स्मृतियों की दुनिया में वापसी का संसार है। यहाँ देवता हैं, पुरखे हैं, परिवार है, पड़ोस है और उनके नये अर्थ और स्मृतियों को खोलती भाषा है। बीसवीं सदी में अकेले हो गये एक संवेदनशील कवि की बैचेनी का युगबोध है। अपने समय का खामोश सामाजिक तनाव है, जो जीवन में अपने न होने को शब्दों में भरने का उपक्रम बन गया है। यहाँ कविता बीसवीं सदी में छूट रहे, टूट रहे रिश्तों के खालीपन में जीवन की जरूरी समीक्षा है। साहित्य में समकालीन जीवन के साथ समकालीन कलाओं का गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य से उसकी मनुष्यता छीन रही शक्तियों का साहित्य के साथ कलाएँ भी प्रतिरोध करती हैं, कलाओं का यही प्रतिरोध समकालीन कविता में यहाँ गहरी अर्थमयता के साथ दर्ज किया गया है। इसी अर्थ में अशोक वाजपेयी कविता का सृजन करते हैं।

आज हम समय के साथ हम लगातार अनदेखा करते हुए किसी तानाशाह राजनेता की तरह आगे बढ़ते जा रहे हैं। जीवन, उसके रिश्तों, लोगों और वस्तुओं को विस्मृत करते जा रहे हैं। ये कविताएँ उस बीते हुए उपेक्षित जीवन को फिर से केन्द्रीय बनाती हैं। यहाँ यह सवाल लाजिमी है कि आजाद भारत की राजनैतिक, साम्प्रदायिक उथल-पुथल और आंदोलन अशोक वाजपेयी के काव्य संसार से बाहर हैं। क्यों? इसका ठीक-ठीक जबाब कविता ही देती है। हिन्दी कविता के खासकर आधुनिक हिन्दी कविता के आन्दोलनों में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद नयी कविता, अकविता, सादोत्तरी कविता, सामाजिक आंदोलन का नेतृत्व करने वाले कविता युग अधिक रहे हैं। हिन्दी कविता अपने प्रत्येक आन्दोलन में भाषा में अपने पूर्ण आवेग और अभिव्यक्ति के साथ समाज में सामाजिक, आर्थिक के साथ राजनैतिक जनतंत्र की स्थापना की प्रबल पक्षधर रही है। "पिछली